11. 'क्लासिकल लैंग्वेज' किस भाषा का नाम है?

अ) व्यावसायिक ब) साहित्यिक क) अभिजात ड) राष्ट्रभाषा

12. एकाधिक व्यक्तिबोलियों से किस का निर्माण होता है?

अ) उपबोली ब) उपभाषा क) भाषा ड) अपभाषा

13. 'पिन्ज इंगलिश' किस देश की मिश्रित भाषा है?

अ) फ्रांस ब) स्पेन क) रूस ड) चीन

14. 'कूट भाषा' के मुख्य उद्देश्य कितने है?

अ) तीन ब) दो क) पाँच ड) चार

15. 'एस्पिरेन्तो' कृत्रिम भाषा में व्याकरण के कितने नियम थे?

अ) बारह ब) तेरह क) सोलह ड) पन्द्रह

1.2.4 भाषाओं का वर्गीकरण : आकृतिमूलक वर्गीकरण, पारिवारिक वर्गीकरण :

किसी भी विषय अथवा वस्तु के वर्गीकरण के अध्ययन के समय उसे समझने समझाने में सहायता मिलती है। ज्ञान अखंड है मगर उसका अध्ययन करते समय उसका विभाजन या खंड-खंड करके अध्ययन किया तो सौकर्य आता है। इसी वास्तविकता एवं व्यावहारिक उपयोगिता को ध्यान में रखकर संसार की भाषाओं के अध्ययन के लिए भाषाओं का वर्गीकरण किया जाता है। संसार में बोली जानेवाली भाषाओं की निश्चित संख्या ज्ञात नहीं है किन्तु अनुमान किया जाता है कि लगभग 3000 भाषाएँ हैं। इतनी भाषाओं को जाननेवाले व्यक्ति की कल्पना करना भी व्यर्थ है। पाँच-दस तक भाषाएँ जाननेवाले लोग अपवाद के रूप में मिलते हैं। संसार में जो इतनी भाषाएँ हैं उनके वर्गीकरण के कई आधार हो सकते हैं जो इस प्रकार -

1) महाद्विप के आधार पर - इसके अन्तर्गत एक महाद्विप के अन्तर्गत बोली जानेवाली भाषाएँ आती है, जैसे योरोपीय भाषाएँ, एशियायी भाषाएँ आदि।

2) देश के आधार पर - इस वर्गीकरण के अन्तर्गत एक ही देश के अन्दर बोली जानेवाली भाषाएँ आती हैं; जैसे भारतीय भाषाएँ, चीनी भाषाएँ।

3) काल के आधार पर - यह वर्गीकरण काल का खण्ड बनाकर किया जाता है; जैसे प्रागैतिहासिक भाषाएँ, मध्यकालीन भाषाएँ, आधुनिक भाषाएँ आदि।

4) धर्म के आधार पर - धर्म के आधार पर भी भाषाओं का वर्गीकरण किया जाता है। जैसे हिंदू भाषाएँ, ईसाई भाषाएँ।

5) आकृती या रूप के आधार पर - आकृति या रूप के वर्गीकरण के आधारपर जैसे अयोगात्मक भाषाएँ, योगात्मक भाषाएँ।

6) परिवार के आधार पर - इस में एक परिवार के भाषाओं के आधार पर वर्गीकरण किया जाता है। इसका आधार एकही परिवार रहता है, जैसे द्रविड परिवार और भारोपिय परिवार की भाषाएँ आदि।

7) प्रभाव के आधार पर - प्रभाव के आधार पर किए गए वर्गीकरण के आधार पर जैसे संस्कृत प्रभावित, फारसी प्रभावित भाषाएँ आदि।

इस तरह भाषाओं के वर्गीकरण के सात आधार किए जा सकते हैं। किंतु इनमें से आकृति या रचना के आधार पर या आकृतिमूलक और परिवार के आधार पर किया गया वर्गीकरण विशेष महत्त्वपूर्ण माना जा सकता है। इन दोनों पर अब विस्तृत विवेचन किया जाएगा।

◆ आकृतिमूलक वर्गीकरण :

जो वर्गीकरण पद, रूप और रचना पर आधारित हो उसे आकृतिमूलक वर्गीकरण कहते हैं। इसी के आधार पर इसे अन्य नाम दिए हैं - पदात्मक, रूपात्मक और संरचात्मक आदि। इस वर्गीकरण का आधार संबध तत्त्व से है। किसी भी भाषा में प्रमुख दो तत्त्व होते हैं - अर्थतत्त्व और संबंधतत्त्व। इनमें से अर्थतत्त्व - वस्तुओं, कार्यो या विचारों का अर्थ सूचित करता है। और संबंधतत्त्व - अर्थतत्त्व में परस्पर संबंध जोडता है। जैसे लड़के सुबह को मोटर साइकिल से जाएँगे। इस वाक्य में लड़के सुबह, मोटर, साइकिल और जाना आदि अर्थतत्त्व है। तथा को, से और येंगे संबंधतत्त्व है। और अर्थतत्त्व में संबंधतत्त्व जोड़ने की प्रक्रिया को पद-रचना कहते हैं। विवेचित वाक्य में 'लड़के' और 'मोटर साइकल' अर्थतत्त्व को किस प्रकार से एक दूसरे को साथ बाँधा गया है। दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि शब्दों को स्पष्ट करने और उनका अर्थ जानने उसमें विभक्ति जोड़ी जाती है। इस क्रिया में वाक्य-रचना हमारे सामने स्पष्ट होती है लड़के, मोटर साइकल और जाना इनका रूप धातु में किन प्रत्ययों के योग से बना है। पदरचना किस प्रकार हुई है इस प्रकार हम देखते हैं कि वाक्य-रचना, आकृतिमूलक वर्गीकरण के आधार है। इस तरह आकृतिमूलक वर्गीकरण में शब्द से रूप बनाने की पद्धति के आधारपर जो भाषाएँ समानता रखती है वे एक वर्ग की होती है।

जिन भाषाओं में पदों या वाक्यों की रचना का ढ़ंग एक जैसा होता है उनमें आकृतिमूलक साम्य होता है उन्हें ही एक वर्ग में रखा जा सकता है। इसी के आधार पर कहा जा सकताहै कि पद-रचना और वाक्य-रचना को आधार बनाकर जो वर्गीकरण होता है उसे आकृतिमूलक वर्गीकरण कहते हैं।

संसार की भाषाओं को इस वर्गीकरण के आधार पर कई वर्गों में रखा गया है किंतु वे विशेष लाभकारी नहीं होंगे। संक्षेप में बताना आवश्यक है इसलिए आकृतिमूलक वर्गीकरण के दो भेद करना सुविधाजनक होगा।

i) अयोगात्मक (Isolating)
ii) योगात्मक (Agglutinating)

i) अयोगात्मक भाषाएँ :

जिन भाषाओं में प्रत्यय, विभक्ति, उपसर्ग या परसर्ग जैसी कोई चीज या संबंध तत्त्व नहीं होता उन्हें अयोगात्मक

भाषाएँ कहते हैं। इन भाषाओं के प्रत्येक शब्द की स्वतंत्र सत्ता होती है और वाक्य में शब्दों के प्रयुक्त होने पर भी वह सत्ता ज्यों-कि-त्यों रहती है। अर्थात शब्दों का व्याकरणिक विभाजन नहीं होता। संज्ञा सर्वनाम, विशेषण, क्रिया-विशेषण आदि को कोटियाँ नहीं होती। एक शब्द, संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, विशेषण आदि सभी का कार्य करता है। ऐसी भाषाओं को स्थान प्रधान भाषाओं की संज्ञा दी जाती है। इसे एकाक्षर भी कहा जाता है। विश्व में चीनी भाषा इसका सर्वोत्तम उदाहरण है।

उदा. न्गो = मैं
ता = मारना
नि = तुम

इन शब्दों से 'न्गो ता नि = मैं मारता हूँ तुमको। इस वाक्य का अर्थ पदक्रम पर आधारित है। नि ता न्गो = तुम मारते हो मुझ को। हिंदी का एक उदाहरण देखते हैं - 'साँप मेंढ़क खाता है' इस वाक्य में कर्ता 'साँप' है और कर्म 'मेंढक'। अब 'मेंढ़क साँप खाता है।' यहाँ 'मेंढ़क' कर्ता बन गया और 'साँप' कर्म। यह सब स्थान भेद के कर्तत्त्व और कर्मत्व का कोई भेदक चिह्न शब्दों के साथ लगा नहीं है।

इन दोनों उदाहरणों से बात स्पष्ट हो गई है कि हिंदी योगात्मक भाषा है। हिंदी भाषा में ऐसे वाक्य अपवाद ही है। हिंदी का उदाहरण केवल समझाने के लिए दिया था। योगात्मक भाषाओं में वाक्य विन्यास की स्वाधीनता रहती है किंतु अयोगात्मक भाषाओं में नहीं होती। अयोगात्मक वर्ग की प्रतिनिधि भाषा है चीनी भाषा। चीनी के अतिरिक्त तिब्बती, बर्मी, स्यामी, अनामी तथा सुदानी (आफ्रिका के सुदान देश की भाषा) आदि भाषाएँ इसी वर्ग में आती हैं। अयोगात्मक वर्ग की भाषाओं की कुछ विशेषताएँ है जो इस प्रकार है -

1) अयोगात्मक भाषाओं में पदक्रम (शब्दक्रम) का सर्वोपरि महत्त्व होता है 'न्गो ता नि' और 'नि ता न्गो' दोनों के अर्थ अलग-अलग निकलेंगे। अर्थभेद पदक्रम पर आधारित है।

2) अयोगात्मक भाषाओं में शब्दों के व्याकरणिक भेद नहीं होते। अत: एक ही शब्द प्रयोग के अनुसार संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया आदि कुछ भी हो सकता है जैसे 'ता' = महान् (विशेषण), महत्ता (भाववाचक संज्ञा), महान होना (क्रिया), महत्ता के साथ (क्रिया विशेषण)। अर्थात इन भाषाओं का व्याकरण ही नहीं होता।

3) इन भाषाओं के शब्दों में प्रत्यक्ष या विभक्ति नहीं जोड़ी जाती है अर्थात शब्दों की निश्पत्ति कुछ जोड़कर नहीं की जाती है।

4) स्वरभेद में एक शब्द के अनेक भेद हो जाते हैं, जिसके अलग अलग अर्थ भेद हैं।

5) आयोगात्मक भाषाओं में निपातों (अव्ययों) का भी प्रयोग होता है जैसे चीनी में 'चु' भाववाचक निपात है इसे विशेषण के साथ लगाएँ तो वह भाववाचक संज्ञा बन जाती है जैसे -

हाउ = अच्छा   हाउ चु = अच्छाई
चाङ् = लम्बा   चाङ्चु = लम्बाई

और एक उदाहरण देखा जा सकता है, यानी निपात से पद या वाक्यरचना की पद्धति समझ में आना सहज होगा।

जिन = मनुष्य, तो = कई; कई मनुष्यों के लिए 'तोजिन' कहा जाता है। (चीनी भाषा का उदाहरण है।)

6) अयोगात्मक भाषाओं के शब्द एक अक्षर के होते है।

ii) योगात्मक भाषाएँ :

'योगात्मक' शब्द सेही स्पष्ट होता है कि इस वर्ग की भाषाओं में प्रत्यय, विभक्ति के योग से शब्दों की निष्पत्ति होती है। यानी 'सम्बन्ध-तत्त्व' आदि जोडकर शब्द और वाक्य की निश्पत्ति की जाती है। इनमें अर्थतत्त्व और सम्बन्ध तत्त्व एक दूसरे से मिले रहते है। योगात्मक के प्रमुख तीन भेद है -

(क) अश्लिष्ट योगात्मक

(ख) श्लिष्ट योगात्मक

(ग) प्रश्लिष्ट योगात्मक

अश्लिष्ट योगात्मक में अर्थतत्त्व के साथ प्रत्यय या विभक्ति का योग होता है।

प्रश्लिष्ट में रचनातत्त्व और अर्थतत्त्व का ऐसा संयोग रहता है कि उनका अंतर करना सुकर नहीं होता।

(क) अश्लिष्ट योगात्मक :

अश्लिष्ट योगात्मक भाषाओं में प्रकृति एवं प्रत्यय (सम्बन्ध तत्त्व और अर्थतत्त्व) इस प्रकार एक दूसरे से जुड़े रहते है कि दोनों का पार्थक्य दिखाई पडता है। दोनों की स्थिति स्पष्ट दिखाई देती है। इस वर्ग की भाषाओं को बिल्कुल सहजता के साथ समझना या सीखना संभव होता है। इस प्रकार की भाषा तुर्की है। वहाँ पर शब्दों में अवयवों का योग अत्यंत सुंदर होता है। मालूम पड़ता है कि किसी ने सुड़ौल ढ़ाँचे में शब्दों को काँट-छाँटकर बैठा दिया है जैसे-

एव = घर (एकवचन)।
एव-देन = घर से ।
एव-इम = मेरा घर।
एव-इम-देन = मेरे घर से।
एव-लेर = घर (बहुवचन)।
एव-लेर-देन = घरों से।
एव-लेर-इम = मेरे घरों से।[4]

(शर्मा देवेन्द्रनाथ : 1972)

अश्लिष्ट योगात्मक में रचनातत्त्व, अर्थतत्त्व के कहीं पूर्व में जुटता है। इनका योग मध्य, पूर्व या कभी अंत में भी आ सकता है। इसी के आधार पर इसके चार भेद किए गए हैं -

i) पूर्व योगात्मक

ii) मध्य योगात्मक

iii) अन्त योगात्मक

iv) पूर्वान्त योगात्मक

i) पूर्व योगात्मक : इन भाषाओं में प्रत्यय के स्थानपर उपसर्ग का प्रयोग होता है। वाक्य के अन्तर्गत शब्द बिल्कुल अलग-अलग रहते हैं। शब्दों की रूप रचना में सम्बन्धतत्त्व केवल आरम्भ में लगता है। इसीकारण ये 'पूर्व योगात्मक' कही जाती है। अफ्रीका की बांटू भाषा में यह प्रवृत्ति पाई जाती है उसकी काफिर और जुलू भाषाओं से उदाहरण देखे जा सकते है।

जुलू भाषा में -

उमु = एकवचन का चिह्न।

अब = बहुवचन का चिह्न।

न्तु = आदमी।

न्ग = से।

इनके योग से शब्द बनते हैं -

उमुन्तु = एक आदमी।

अबन्तु = कई आदमी।

न्गउमुन्तु = आदमी से।

न्गअबन्तु = आदमियों से।

काफिर भाषा :

प्रकृति और प्रत्यय -

कु = के लिए।

ति = हम।

नि = उन।

पूर्व योग से निष्पन्न रचनाएँ -

कुति = हमको या हमारे लिए।

कुनि = उनको या उनके लिए।

इन सभी उदाहरणों में योग (उमु या अब आदि सम्बन्धतत्त्व) आरंभ में है।

ii) मध्य योगात्मक : इन भाषाओं में योग मध्य में होता है। इन भाषाओं में शब्द प्राय: दो अक्षरों के होते हैं। इस प्रकार के उदाहरणों में भारत की भाषाएँ और हिंद महासागर से अफ्रीका तक फैले द्वीपों की भाषाओं में मिलते है। संथाली भाषा का एक उदाहरण -

प्रकृति और प्रत्यय -

मंझि = मुखिया।
प = बहुवचन का चिह्न।
मपंझि = मुखिये।

इसी तरह योग से निष्पन्न रचनाएँ -

दल = मारना।
दपल = एक दूसरे को मारना।

इन दोनों उदाहरणों में बहुत्व का बोधक 'पं' और परस्परता का बोधक 'प' शब्द दोनों मध्ययोग के माने जाएँगे।

iii) अन्त योगात्मक : इस वर्ग की भाषाओं में योग की क्रिया शब्द के अन्त में सम्पन्न होती है अत: सम्बन्ध तत्त्व केवल अन्त में जोड़ा जाता है। युराल अल्टाइक तथा भारत की द्रविड़ परिवार की भाषाएँ ऐसी हैं। कुछ उदाहरण लिए जा सकते है -

तुर्की -

प्रकृति और प्रत्यय

एव = घर।
एवलेर = कई घर।
एवलेर इम = मेरे घर।

कन्नड -

एकवचन	बहुवचन
कर्ता - सेवकनु	सेवक-रू
कर्म - सेवक नन्नु	सेवक-रन्नु
करण - सेवक-निंद	सेवक-रिंद
सम्प्रदान - सेवक-निगे	सेवक-रिगे
सम्बन्ध - सेवक-न	सेवक -र
अधिकरण - सेवक-नल्लि	सेवक - रल्लि'[5]

(शर्मा देवेन्द्रनाथ : 1972)

इस प्रकार शब्द के अन्त में रचना-तत्त्व जोडकर अर्थ बदल दिया गया है।

iv) पूर्वान्त योगात्मक : पूर्वान्त का अर्थ है पहले और अन्त में। इस वर्ग की भाषाएँ योगात्मक और अयोगात्मक के बीच पडती है। सम्बन्ध तत्त्व अर्थतत्त्व के पूर्व और अन्त में लगाया जाता है। पूर्वान्तयोग के उदाहरण न्यूगिनी की मफोर भाषा में मिलते हैं। जैसे -

प्रकृति और प्रत्यय -

ज = मैं

म्नफ़ - सुनता

उ - तू

ज-म्नफ़-उ - मैं सुनता हूँ तुझे।

यहाँ 'म्नफ़' के पूर्व और अन्त दोनों ओर रचनातत्त्व का योग हुआ है।

इस प्रकार अब तक हमने अश्लिश्ट योगात्मक भाषाओं के चार भेदों का अध्ययन किया है। अब देखेंगे श्लिष्ट योगात्मक वर्ग।

(ख) श्लिष्ट योगात्मक :

जिन भाषाओं में सम्बन्ध तत्त्व (प्रत्यय) को जोड़ने के कारण अर्थतत्त्ववाले भाग में कुछ परिवर्तन के दर्शन होते हैं किन्तु सम्बन्धतत्त्व की झलक अलग ही मालूम पड़ती है तो वह भाषा श्लिष्ट योगात्मक होती है। संस्कृत के वेद, देह, भूत, भूगोल आदि शब्दों से वैदिक, दैहिक, भौतिक, भौगोलिक आदि शब्द बनते हैं। अरबी भाषा का एक उदाहरण देख सकते हैं - 'क् - त् - ल्' (मारना) धातु को लिया जा सकता है जिसमें विभिन्न रचना तत्त्वों का योग करके -

क़तल = खून।

क़ातिल भ= मारनेवाला।

क़ित्ल = शत्रू।

यानी क़तल से कितने शब्द बनाएँ जा सकते है। मूल शब्द (क-त्त-ल) से निष्पन्न सभी शब्द बने, संस्कृत के उदाहरण में वेद, देह, भूत, भूगोल आदि से शब्द बने इनमें परिवर्तन होने पर अन्तवर्ती स्वरों का योग स्पष्ट प्रतीत होता है। इन शब्दों में (अर्थात वेद-वैदिक, देह-दैहिक, भूत-भौतिक, भूगोल-भौगोलिक) 'इक' जोड़ा गया है किंतु आरंभिक 'वे', 'इ' और 'भू' में कुछ परिवर्तन हो गया है।

हम देख चुके हैं कि विकार आ जाने पर रचनातत्त्व और अर्थतत्त्व को सहजता से पहचाना जा सकता है। संसार में इस वर्ग की भाषाएँ अधिक है। भारोपिय, सामी और हामी परिवार की भाषाएँ श्लिष्ट योगात्मक है।

भाषावैज्ञानिकों ने श्लिष्ट योगात्मक के भी दो वर्ग किए है। i) अन्तर्मुखी श्लिष्ट, ii) बहिर्मुखी-श्लिष्ट। फिर उन दोनों के दो-दो उपभेद किए जा सकते है संयोगात्मक और वियोगात्मक। बहुत सी भाषाएँ संयोगावस्था से वियोगात्मक बन गई है। अंग्रेजी, हिंदी, बँगला आदि वियोगात्मक भाषाएँ हैं।

(ग) प्रश्लिष्ट योगात्मक :

जिन भाषाओं में अर्थतत्त्व और रचनातत्त्व एक-दूसरे में इतने घूल मिल जाते हैं कि उनको पृथक करना संभव नहीं होता, पहचानना भी कठिन होता है। उनका योग ही ऐसा होता है कि उनको अलग नही किया जा सकता। वास्तविकता तो यह है कि कई शब्दांशों के योग से नया शब्द बनता है। वह शब्द पूरे वाक्य का अर्थ बदल देता है। संस्कृत के एक शब्द के आधार पर इसको स्पष्ट किया जा सकता है।

जिगमिषति = वह जाना चाहता है।

इस एक शब्द में ही वह जाना, चाहना, वर्तमानकाल, अन्य पुरुष, एकवचन आदि आशयों का ज्ञान हो जाता है। एक शब्द होते हुए भी पूरे वाक्य का काम करता है इसी तरह 'पिपठिषामि' का अर्थ होता है - मैं पढ़ना चाहता हूँ। यह भी एक शब्द होकर पूरे वाक्य का अर्थ देता है। इस कोटि में एक्सिमो या बास्क भाषाएँ आती है।

बास्क भाषा का एक उदाहरण देख सकते है -

दकर्किओत = मैं इसे उस तक ले जाता हूँ।
नकार्स = तू मुझे ले जाता है।
हकात = मैं तुझे ले जाता हूँ।

इस तरह एक-एक अवयव से जितना अर्थ हो सकता है संक्षिप्त होकर एक अर्थ का वाचक हो जाता है।

आकृतिमूलक वर्गीकरण के उपर्युक्त प्रमुख भेद है लेकिन जब तक संसार की सभी भाषाओं का सूक्ष्म अध्ययन नहीं होगा तब तक अयोआत्मक, योगात्मक वर्गीकरण पूर्णत: वैज्ञानिक नहीं कहा जा सकता। साथ ही भेदीकरण के उपर्युक्त सभी आधार न्यूनाधिक मात्रा में सभी भाषाओं में पाए जाते हैं। शिष्ट और प्रश्लिष्ट में निश्चित विभाजक रेखा खींचना बड़ा कठिन है।

◆ पारिवारिक वर्गीकरण :

आकृतिमूलक वर्गीकरण के आधारपर स्पष्ट हो चुका है कि इसमें केवल भाषा की आकृति, रचना या रूप को केंद्रित किया जाता है। आकृतिमूलक में रचना-तत्त्व या सम्बन्ध-तत्त्व अध्ययन का आधार था। किंतु पारिवारिक वर्गीकरण में इस रचना के साथ अर्थतत्तव पर भी ध्यान दिया जाता है। इस वर्गीकरण में एक वंश या परिवार में केवल वे भाषाएँ आ जाती है जिनमें आकृति के अतिरिक्त शब्दों में भी ध्वनि और अर्थ की दृष्टि से साम्य होता है। कालांतर में वे भाषाएँ विकसित होती है उनमें इतना अन्तर आ जाता है कि वे बिल्कुल ही भिन्न प्रतीत होती है।

एक वंश में जिस प्रकार पीढ़ी-दर-पीढ़ी अनेक लोग उत्पन्न हो जाते हैं वे एक परिवार या एक वंश के कहे जाते हैं उसी प्रकार मूलभाषा से पीढ़ी-दर-पीढ़ी में अनेक भाषाएँ एवं बोलियाँ विकसित हो जाती है। वे सब एक ही परिवार की होती है। इन भाषाओं में आकृति, रचना-तत्त्व और अर्थतत्त्व में साम्य पाया जाना स्वाभाविक है। भिन्न-भिन्न भाषाओं के एकही अर्थ के सूचक शब्दों को लेकर स्पष्ट किया जा सकता है कि उनमें साम्य या सादृश्य की स्थिति किस तरह है जैसे -

संस्कृत - मातृ, लातिन - मातेर, फारसी - मादर, अंग्रेज - मदर और जर्मन - मुत्तेर। माँ के लिए जिन शब्दों का उच्चारण किया जाता है उन शब्दों को हमने देखा। इन भाषायी क्षेत्रों में हजारों कोसों का फासला होने पर भी इतना सादृश्य देखकर आश्चर्य होना स्वाभाविक है। लेकिन साम्य का कारण क्या हो सकता है? इनका मूलरूप कौन सा था? मातृ, मातेर, मादर, मदर, मुत्तेर आदि शब्दों में साम्य के साथ भिन्नता भी कम नहीं है। उनके कारण क्या है? इतना होते हुए पहले साम्य के कारण कहीं न कहीं इनका पारिवारिक सम्बन्ध होगा ऐसा लगता है।

भाषाओं के पारिवारिक वर्गीकरण की दृष्टि से कुछ बातों पर विचार करना जरूरी है उसके आधारपर ही भाषाओं के परिवार-निर्धारण करना संभव होगा।

1) ध्वनि-साम्य 2) पद-रचना 3) वाक्य-रचना 4) शब्द-भांडार 5) भौगोलिक समीपता इन आधारों पर वर्गीकरण करके परीक्षण किया तो कुछ मात्रा में बताया जा सकताहै कि वे एक परिवार की है या नहीं। किंतु बात यह है कि इन आधारों पर भी भाषाविदों का एक मत नहीं होता। उपर्युक्त आधार तो हैं मगर भाषा में ध्वनि, शब्दभांडार और व्याकरण रचना इनका प्रमुख स्थान होता है।

ध्वनि-साम्य या ध्वनि को महत्त्वपूर्ण माना तो कालांतर में ध्वनि परिवर्तित होती है। कुछ ध्वनियाँ ऐसी है जो एक ही परिवार की सभी भाषाओं में नहीं मिलती। इसी कारण ध्वनि को पारिवारिक वर्गीकरण में प्रमुख आधार मानना कठिण है। संस्कृत में 'ज' ध्वनि नहीं है यद्यपि भारत यूरोपयि परिवार की फारसी, रूसी जर्मन आदि में वह विद्यमान है। ङ, ढ संस्कृत में नहीं थी पर हिन्दी आदि आधुनिक भारतीय भाषाओं में आ गयी।

शब्द-भांडार को यदि पारिवारिक वर्गीकरण में भाषाओं का प्रामाणिक आधार मानने का प्रयास किया तो वह भी ठोस नहीं रहता। क्योंकि अनेक कारणों से अन्य भाषाओं के शब्द आ जाया करते है। जैसे 'चाय' शब्द चीनी, रूसी, तुर्की हिंदी में समान रूप से प्रयुक्त होता है, किंतु ये चारों भाषाएँ एक परिवार की नहीं है, अरबी के हजारों शब्द फारसी में आ गए हैं। उनमें से बहुत से शब्द हिंदी में आ गए हैं इससे यही निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि उक्त चार भाषाएँ एक परिवार से संबंध रखने में समर्थ नहीं हैं।

अर्थ की स्थिति ध्वनि और शब्द-भण्डार की स्थिति से अलग नहीं हो सकती। ध्वनि-परिवर्तन की तरह अर्थ-परिवर्तन है । आरंभ में 'मृग' शब्द पशु-मात्र के अर्थ में प्रयुक्त होता था किंतु बाद में वह शब्द पशु विशेष के अर्थ में भी प्रयुक्त होने लगा। फारसी भाषा में तो उसके ध्वनि और अर्थ परिवर्तन दिखाई देते हैं जैसे 'मृग' से मुर्ग बना और जिसका अर्थ बना पक्षी।

पद-रचना और वाक्य रचना दोनों व्याकरण से अनुशासित रहने के कारण उनमें कम-से-कम परिवर्तन होता है। ध्वनि-परिवर्तन, अर्थ परिवर्तन और अन्य भाषाओं के शब्दों का इधर-उधर होना स्वाभाविक है मगर पद-रचना और वाक्य-रचना में सहजता से परिवर्तन संभव नहीं होता। इसी कारण भाषाओं के पारिवारिक वर्गीकरण में इन्हें महत्त्व देना पडता है।

भौगोलिक समीपता का भी पारिवारिक वर्गीकरण में योगदान है। बहुत सी भाषाएँ एक दूसरे के समीप होती है सीमाएँ एक होती है फिर भी वे एक परिवार की नहीं हो सकती। जैसे-तेलगू और उडिया। अरबी और फारसी में भौगोलिक दूरी नहीं है, पर वे दोनों एक परिवार की है। इसी प्रकार भौगोलिक समीपता भी वर्गीकरण की दृष्टि से लाभदायक नहीं है।

भाषाओं के पारिवारिक वर्गीकरण में भले ही विवेचित घटक सीधे-आधार के रूप में प्रभावशाली साबित नहीं हो सकते किन्तु इनके अभाव में वर्गीकरण करना भी संभव नहीं है तात्पर्य न्यूनाधिक मात्रा में इनका वर्गीकरण पर

प्रभाव पडता है। सूक्ष्मता से देखा है तो हो सकता है, मगर स्थूल रूप से देखा तो ध्वनि, शब्द भण्डार और व्याकरण विशेष प्रभावी आधार के रूप में स्वीकृत करने पडेंगे। भाषाओं की समकालिकता, सामग्री का अभाव काल, भेद और कुछ ऐसे कारण है जो पारिवारिक वर्गीकरण की दृष्टि में संदिग्धता पैदा करते हैं। फिर भी ध्वनि, शब्द, व्याकरण को केंद्र में रखकर भाषाओं को विभिन्न परिवारों में बाँटने का प्रयास किया गया है।

भोलानाथ तिवारी भूगोल के आधार पर संसार की भाषाओं का वर्गीकरण करना सुविधाजनक मानते हैं। उन्होंने विश्व में चार भाषाखंड माने है 1) अफ्रिका खंड, 2) यूरेशिया खंड 3) प्रशांत महासागरी खंड 4) अमरीक-खंड। इन खंडों के अंतर्गत भाषा परिवारों का विभाजन किया है।

देवेंद्रनाथ शर्मा ने संसार के भाषा परिवारों की संख्या अनिश्चित बतायी है। बारह से सौ तक भाषा परिवार मानकर अठारह परिवारों को स्वीकृत किया जो निर्विवाद लगते हैं वे इस प्रकार -

1) भारत-यूरोप परिवार	2) द्रविड परिवार
3) बुरूरास्की परिवार	4) उराल-अल्ताई परिवार
5) कोकेशी परिवार	6) चीनी परिवार
7) जापानी कोरियाई परिवार	8) अत्युत्तरी (हायपर बोरी) परिवार
9) सामी-दामी परिवार	10) सुदानी परिवार
11) बन्तू परिवार	12) होतेन्तोत-बुशमैनी परिवार
13) बास्क परिवार	14) मलय बहुद्वीपीय परिवार
15) पापुई परिवार	16) ऑस्ट्रेलियाई परिवार
17) दक्षिणपूर्व-एशियाई परिवार	18) अमरीकी परिवार

उपर्युक्त भाषा परिवार चार खंडो (भौगोलिक दृष्टि) में विभाजित किए गए हैं। (1) यूरेशिया खंड में 1 से 10 तक परिवार। (2) अफ्रिका खंड में 10 से 13 तक परिवार, (3) प्रशांत महासागरीय खंड में 14 से 17 तक परिवार, (4) अमरिक खंड में अठारहवाँ परिवार.

अब हम उपर्युक्त 18 भाषा परिवारों पर संक्षेप में प्रकाश डालेंगे।

1) भारत-यूरोप परिवार :

यह परिवार बहुत विशाल है। विश्व के हर भूभाग पर इन भाषाओं को बोलनेवाले रहते हैं। इस परिवार के अन्य नाम है - भारत-जर्मनिक, आर्य-परिवार, भारत-यूरोपिय और भारत-हित्ती आदि लगभग एक सौ पाँच करोड लोगों द्वारा इस परिवार की भाषाएँ बोली जाती है। मध्य एशिया, रूस (दक्षिण भाग), काकेशश, स्केण्डीने विया, उत्तरी ध्रुव, पोलैण्ड का कुछ भाग, तिब्बत, एशिया माइनर, हंगरी का कुछ भाग, लिथु आमिया, रूसी, तुर्किस्तान, केस्पियन सागर का उत्तरी भूभाग और भारत आदि इसको बोलने वाले परिवार है। इन परिवारों का अन्य परिवारों की अपेक्षा सांस्कृतिक, वैज्ञानिक साहित्यिक भाषावैज्ञानिक अध्ययन विश्लेषण अधिक हुआ है।